International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मंगल सिंह मुण्डा के नाटकों में रचित विविध चेतनाएं

सोमा महतो

शोध छात्र, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध संक्षेप

मंगल सिह मुण्डा मुण्डारी साहित्य में एक महत्वपूण नाटककार है | उन्होंने मुण्डारी साहित्य में नाटक विद्या को दृढ आधार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं | जिन्होने आपने नाटकों के माध्यम से आदिवासी समाज की समास्याओं, उनके संघर्षो और समाजिक विषमताओं को उजागार किया है। उनके नाटकों में यथार्थवाद और सामाजिक सुधार की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। विशेष रूप से झारखण्ड के आदिवासी समुदाय की पीड़ा, विस्थापान, मानव तस्करी, जातीय भेदभाव जैसे विषयों पर उन्होंने अपनी नाट्य लेखनी लिखे हैं |

मूल शब्द :- नाटक, आदिवासी विमर्स, सामाजिक सोहार्द, मंगल सिंह मुंडा

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होता है। मूल रूप से नाटक शब्द की उत्पत्ति नट् धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है उत्तम एंव सात्विक भावों का प्रदर्शन। सामान्यः नट् अभिनेता को कहा गया है। भारत में अभिनय कला और रंगमंच का वैदिक काल में ही निर्माण हो चुका था। तत्पश्चात संस्कृत रंगमंच तो अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। भरत मुनि का 'नाट्य शस्त्र' इसका प्रमाण है। प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में नाटक को दृश्य-काव्य के एक स्वरूप रूपक के उप-स्वरूप के रूप में बताया गया है, अतः नाटक एक दृश्य काव्य है। भरत मुनि के अनुसार “जिसमें आमजन का सुख-दुख समन्वित होता है तथा अंगों के द्वारा जिसे अभिनीत किया जा सके वह नाटक है।" नाटक के स्वरूप के संबंध में आचार्य विश्वनाथ ने बताया है की "नाटक का वृत ख्यात होना चाहिए। नाटक में विलास, समृद्धि आदि गुण तथा कई प्रकार के एश्वर्यो का वर्णन होना चाहिए।"

"पाणिनि नाट्य की उत्पति नट् धातु से बतलाते हैं। नट् में नृत प्राकृत रूप में अवस्थित है। नट्-नृत समानार्थी है। दोनों में अभिनय व्याप्त है। नट् में संवाद की प्रधानता एवं नृत में भाव की प्रधानता होती है।" नाट्य के समानान्तर दो और शब्द हैं नृत और नृत्य। इन दोनों शब्दों की व्युत्पति नट् से बताई गई है किन्तु अर्थ में भिन्नता है। 'नृत ताल लय आश्रित होता है। नृत्य में भाव की प्रधानता होती है। नाटक रस आश्रित होता है। नाटक साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। किसी भी प्रकार के नाटक को देखकर सभी इद्रियाँ सजग हो उठती है। दर्शक नाटक के दृश्यों को आँखों से देखता है। कानों से सुनता है। दर्शक के मन पर देखे गए दृश्य एवं सुने गए संवाद का एक साथ प्रभाव पड़ता है। दृश्यों और संवादों के आधार पर वह बुद्धि से सोचता है। कल्पना से अपने आप को पात्रों की भूमिका में रखकर आनन्द की प्राप्ति करता है। अभिनय कला के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही नाटक है । नाटक गद्य साहित्य का एक भाग है जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक एवं शिक्षा संबंधित विषयों का चित्रण होता है।

मंगल सिंह मुंडा का परिचय

मंगल सिंह मुंडा का जन्म 28 अप्रैल 1945 को झारखण्ड के खूंटी जिले के रंगरोंग नामक गाँव में हुआ था| वे उत्कल विश्वविद्यालय, उडीसा से पत्राचार के माध्यम से बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की | उन्होंने साहित्य क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्र में भी अपनी सेवाएँ दी है | वे दक्षिण-पूर्व रेलवे गार्डेनरीच, कोल्कता में सुपरवैजर के पद पर भी कार्यरत रहे | साहित्यकार के रूप में उन्होंने कई किताबे लिखे है जैसे छैला सन्दू(उपन्यास), महुआ का फुल(कहानी संग्रह), कमिनाला(नाटक), कॉलेज गेट(नाटक) आदि लिखकर मुण्डारी भाषा साहित्य के विकास में अहम योगदान दिए |

मंगल सिंह मुंडा के नाट्य लेखन

मुंडारी में नाटकों की संख्या भी बहुत कम है। इस भाषा में साहित्यिक विधा के रूप में नाटक लेखन का आरंभ भी हाल में हुआ है। नाटक का आरंभ दिलबर हंस के 'ससंकिर बम्बरू' से माना जा सकता है जो सन् 1989 में प्रकाशित हुआ। इसका उल्लेख बीरेंद्र सिंह सोय 'मुंडा' की पुस्तक 'मुंडारी जगर ओड़ोः सहिति रेआ उबर' के पृष्ठ 29 में किया गया है। इसके बाद सन् 2013 में मंगल सिंह मुंडा द्वारा लिखित नाटक 'कामिनाला' (काम की खोज) प्रकाशित हुआ। उनका एक नाटक संग्रह 'कॉलेज गेट' भी है जिसमें कुल पाँच नाटक 'कीया सिंदुरी' (सिंदुर की डिबिया) 'हेडेम हासु' (मीठा दर्द), 'पुरः गे सुकुआन होड़ो' (सबसे सुखी आदमी), 'कॉलेज गेट' (कॉलेज गेट) तथा 'का एड़ेंगोः दीया' (अमर ज्योति) संकलित हैं। इनमें से 'कॉलेज

गेट' को छोड़कर बाकी चारों नाटक उन्हीं की कहानियों का नाट्य रूपांतर है जो 'महुआ का फूल' कहानी-संग्रह में संकलित है।

'कमिनाला' नाटक किताब

'कामिनाला' एक यथार्थवादी नाटक है जिसे कुछ आलोचकों ने समस्या-प्रधान नाटक की श्रेणी में रखा है। यह नाटक मुख्यतः झारखंडी आदिवासियों की एक प्रमुख समस्या मानव तस्करी पर आधारित है। नाटक की कथा के केंद्र में संगीता तिरू नामक आदिवासी किशोरी है। कुछ ऐजेंटों द्वारा छुट्टी मनाने के बहाने उसे दिल्ली के एक सेठ के हाथों बेच दिया जाता है। वहाँ उसका शारीरिक तथा मानसिक शोषण किया जाता है। अंततः वह मानवाधिकार सदस्य तथा पुलिस की सहायता से सेठ को सजा दिलाने में कामयाब होती है। अब वह आगे की पढ़ाई न करके कार्यकर्ताओं की मदद से बिकी हुई लड़कियों को छुड़ाने का फैसला लेती है।

कथावस्तु की दृष्टि से अन्य नाटकों की तुलना में 'कामिनाला' कहीं अधिक प्रासंगिक एवं आधुनिक है। 'कामिनाला' का अर्थ है 'काम की तलाश में'। इसका मूल विषय झारखंड के आदिवासियों द्वारा काम की तलाश में महानगरों की पलायन है। परन्तु इस आड़ में उनका शारीरिक, आर्थिक तथा मानसिक शोषण भी होता है जो एक चिंता का विषय है। आदिवासी समुदाय में स्त्री-पुरुष दोनों के लिए काम की तलाश में बाहर जाना आम बात है। गाँवों में मवेशी चराने के लिए तथा घर के काम-काज में हाथ बंटाने के लिए 'धाँगर' (नौकर) रखे जाते हैं। ये धाँगर नौकर से कहीं अधिक घर के सदस्य की तरह ही होते हैं। परंतु बाहर जाते ही यह धारणा बदल जाती है। इस नाटक में इसे भी संकेतित किया गया है। इसे लक्षित करके रोज केरकेट्टा ने इसकी भूमिका में लिखा है "आरम्भ में महिलाओं का काम की खोज में निकलना दूसरे अर्थ में था, लेकिन समय बीतने के साथ अवैध व्यापार के रूप में रूपांतरण हुआ । पहले गई हुई युवतियाँ सहायक या मददगार के रूप में गईं। आदिवासी सोच के तहत नौकर भी आदमी होता है। वहाँ उसके काम के कारण नहीं, मनुष्य होने के कारण मूल्य है। परन्तु पूंजीवादी समाज में चल-अचल संपत्ति की अवधारणा है। जिसके चलते काम की खोज में गई युवतियाँ भोगवादी संस्कृति की संपत्ति बन जाती हैं। उनका सामाजिक स्तर शून्य पर स्थिर हो जाता है।"

'कॉलेज गेट' किताब

'कॉलेज गेट' नाटक-संग्रह में संकलित सभी नाटक मुंडारी और हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं। नाटक पहले मुंडारी में लिखे गए हैं और उनकी समाप्ति पर हिन्दी में।

पहला नाटक

'कीया सिंदुरी' उनकी कहानी 'सिंदूर की डिबिया' पर आधारित है जो 'दहेज दानव', लखनऊ में सन् 1993 में प्रकाशित हुई थी। यह सामाजिक नाटक है जिसमें दहेज प्रथा पर प्रहार किया गया है। इसकी कथा सुनीता नामक युवती के इर्द-गिर्द घूमती है। उसके घरवालों को उसकी शादी की बड़ी चिंता थी क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अंत में उसके पिता पैसे जुटाने के लिए अपना बगीचा बेच देते है। सुनीता को जब पता चलता है तो वह शादी के दिन ही घर छोड़कर चली जाती है, पत्र में यह लिखकर कि "मैं पति से ज्यादा पिता को महत्त्व देती हूँ। पिता के घर को उजाड़कर पति के घर को बसाना उचित नहीं समझती। थाने पर जाकर मेरे लापता होने की रपट लिखा दीजिए।"

दूसरा नाटक

'हेडेम हासु', ('मीठा दर्द) नामक कहानी पर आधारित है जो 'गतिमान' में सन् 1996 में प्रकाशित हुई थी। यह हिंदू-मुस्लिम एकता पर आधारित है। तपन बाबू धर्म के मामले में काफी खुली सोच के इंसान हैं, इसलिए जब उनके मित्र इकवाल का नमाज पढ़ने का वक्त होता है तो वे उसे बेहिचक अपने पूजा घर में नमाज पढ़ने की इजाजत दे देते हैं। इकबाल के पिता भी प्रगतिशील विचारों के हैं पर उसकी माँ शकीना कट्टर हैं इसलिए वह इकबाल द्वारा घर में प्रसाद लाने पर विरोध जताती है। फिर दोनों पिता-पुत्र उसे समझाते हैं कि "कोई भी धर्म आपस में करना नहीं सिखाता। हम अनुयायी उसे बैर करना सिखाते हैं। "76

तीसरा नाटक

'पुरः गे सुकुआत होड़ो', सबसे ('सुखी सुखी आदमी') कहानी पर आधारित है जो 'छपते-छपते (कलकत्ता) में सन् 1993 में छपी थी। इस नाटक में नाटककार ने श्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। नाटककार ने एक सेठ और एक भिखारी के माध्यम से यह दर्शाया है कि सबसे सुखी इंसान वही है जो श्रम करता है जबकि भी दूसरों से भीख माँगने वाला इंसान सबसे दुखी ।

चौथे नाटक

'कॉलेज गेट' में कॉलेज में होने वाली छेड़छाड़ पर आधारित है जिसमें एक मनचले युवक को तब अपनी गलती की एहसास होता है जब उसकी बहन के साथ छेड़खानी होती है

अंतिम नाटक

का एड़ेंगो दीया भी 'अमर ज्योति' कहानी पर आधारित है। इस नाटक में देश प्रेम को सभी धर्मों से श्रेष्ठ बताया है। इसमें एक हिंदू, एक मुसलमान, एक सिख और एक ईसाई की कहानी है। चारों अंधे हैं और एक मूर्ति को अपने-अपने धर्म का बताकर उस पर अपना दावा साबित करते हैं। अंत में एक दारोगा आकर उन्हें समझाता है कि यह भारत माता की मूर्ति है जिसे पूजने का अधिकार सबको है।

निष्कर्स

इस नाटक संग्रह में 'कॉलेज गेट' को छोड़कर सभी नाटक कहानियों के ही नाट्य-रूपांतर हैं। इसलिए इन नाटकों में कहानी-कला का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। ये नाटक नाट्य कला के स्तर पर उतने उत्कृष्ट नहीं हैं लेकिन मुंडारी भाषा में यह एक अच्छा प्रयास है। सभी नाटक अंकों में विभाजित हैं और अंकों के अंतर्गत कई दृश्य हैं। प्रत्येक दृश्य के आरंभ में स्थान और समय का उल्लेख है और दृश्य से संबंधित संक्षिप्त परिचय भी। किसी-किसी नाटक में मूल कहानी का थोड़ा विस्तार भी है। कुछ नाटकों में संवाद मूल कहानियों से लिए गए हैं लेकिन चूंकि नाटक में संवादों की अधिकांश गुंजाइश होती है इसलिए इनमें घटनाओं को भी संवाद का रूप दिया गया है। 'कामिनाला नाटक ही आदिवासियों की जिंदगी से जुड़ा है जिसमें उनकी एक आधुनिक समस्या से अवगत कराया गया है। कथावस्तु की दृष्टि से यह अन्य नाटकों से बेहतर है परन्तु इसमें चरित्र-चित्रण कमजोर है। मंगल सिंग मुंडा के नाटक मुण्डारी भाषा साहित्य में नाट्य लेखन को समृद्ध करते है | उनके नाटक सामाजिक यथार्थ पर आधारित है और आदिवासी समाज की समस्याओ को उजागर करते है | उनके लेखन में कहानी कला का प्रभाव अधिक है, जिससे नाटकों की भाषा और संवाद सरल तथा प्रभावशाली बनते है |

संदर्भ सूचि

1. डॉ. अंजू कुमारी साहू, नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास
2. लक्ष्मीनारायण लाल, रंगमंच और नाटक की भूमिका, पृष्ट 1, 2
3. सोमा महतो, मुण्डारी नाट्य साहित्य : एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन, प्रस्तावना, शोध प्रारूप
4. मंगल सिंह मुण्डा, कॉलेज गेट
5. मंगल सिंह मुण्डा, कमिनाला
6. डॉ. मंसिद्ध बड़ायुउद, होड़ो जगर सईंति ओडो: सईंति ओलहारियाको, पृष्ट 305